# साबुन

• द्विजेन्द्रनाथ मिश्र 'निर्गुण'

# अन्ताक्षरी

कहानी माला—२५

# साबुन

● द्विजेन्द्रनाथ मिश्र 'निर्गुण'

सुखदेव ने ज़ोर से चिल्लाकर पूछा–मेरा साबुन कहाँ है?"

श्यामा दूसरे कमरे में थी। साबुनदानी हाथ में लिये लपकी आई और देवर के पास खड़ी होकर हौले से बोली–"यह लो।"

सुखदेव ने एक बार अँगुली से साबुन को छूकर देखा और भँवें चढ़ाकर पूछा–"तुमने लगाया था, क्यों?"

श्यामा हौले से बोली–"जरा मुँह पर लगाया था।"

"क्यों तुमने मेरा साबुन लिया ? तुमसे हज़ार बार मना कर चुका हूँ । लेकिन तुम तो....।"

"गाली मत दो ! समझे?"

श्यामा ने डिब्बी वहीं ज़मीन पर पटक दी और तेज़ क़दमों से बाहर जाती-जाती बोली–"ज़रा साबुन छू लिया मैंने, तो मानो गज़ब हो गया!" फिर दूसरे कमरे की चौखट पर मुड़कर, बोली–"मैं क्या चमार हूँ?"

अँगीठी पर तरकारी पक रही थी। श्यामा ने ढक्कन हटाकर, देखा कि तरकारी आधी से ज्यादा जल गई है। उसने कढ़ाई उठाकर, नीचे ज़मीन पर पटक दी।

सुखदेव छोटे भतीजे को सामने बिठाकर उसके सिर पर साबुन मल रहा था। भाभी को देखकर बोला – "काला कर दिया साबुन।"

श्यामा ने बाल्टी वहीं पटक दी, और चढ़े स्वर में पूछा–'क्या बोले?"

सुखदेव ने घबराकर कहा–"धीरे बोलो। भाई साहब आ गये!"

श्यामा ने चौंककर उधर देखा। कमरे के दरवाजे पर पति के जूते चमक रहे थे।...

थाली परोसकर पति को आवाज दी...."आओ।"

ब्रजलाल ने आसन पर बैठकर, भोजन पर एक नजर डाली और पूछा–"आज तरकारी नहीं बनी?"

"नहीं।"

"यहाँ प्याली में क्या है?"

"कदुआ है। लल्ला के लिए रख दिया है। दाल से खाओ।"

पति ने आज्ञा मानकर, एक ग्रास मुख में दिया, और शांत-भाव से बोले–"नमक लाओ।"

"क्या कम है?"–श्यामा ने नमक की बुकनी थाली में छोड़ते हुए पूछा।

"बिलकूल नहीं है"

"क्यों झूठ बोलते हो? मैंने नमक डाला था। शर्त लगाती हूँ।"

ब्रजलाल ने हँसकर कहा–"तुम राजरानी हो। लाओ, रोटी तो दो।"

वे कपड़े पहनकर आफिस जाने को तैयार हुए, तो श्यामा ने चौखट पकड़े-पकड़े, कहा–"मुझे साबुन चाहिए।"

"साबुन !"–पति ने अचरज से कहा–"कैसा साबुन? सुखदेव से कहो। छाता लाओ। वह फाइल उठाना।"

तभी रसोईघर से एक पुकार आई–"भाभी खाना परोसा।"

फिर दो पतली आवाजें एक साथ आई–"भाभी, खाना परोसा।"

बड़ा लड़का अलग थाली में खाता है। छोटा अपने चाचाजी के साथ से खाता है। तीनों पास-पास नहाये-धोये आसनों पर बिराजे, भोजन कर रहे थे।

बड़े लड़के ने मुँह बिचकाकर कहा,"दाल में इतना नमक है कि पूछो मत !"

सुखदेव भतीजे को डाँटकर बोला खाओ चुपचाप !" फिर भाभी के आगे प्याली सरका कर बोला–तरकारी और देना भाभी।"

भाभी ने हँसकर कहा–"तरकारी अब नही है।"

"सब खतम?"

"यह देखो, कढ़ाई आगे खींचकर, हँसकर कहा जल गई सब। यही इतनी बची थी,

सो तुम्हारे लिए छाँटकर निकाल ली थी।"

"देखें, जली हुई का स्वाद देखें।"

श्याम ने कढ़ाई पीछे को करके कहा–"यह तुम्हारे खाने के काबिल नही है। लो दाल और ले लो।"

बड़े लड़के ने कहा मैं भी दाल और लूँगा।

श्यामा ने उसके आगे सरकाकर कहा–"ले, दाल ले !"

लड़का पतीली में झाँककर बोला–"कहाँ है इसमे दाल?"

"दाल नही है। अब तू मेरा सिर खा ले, पेटू !".....

बड़ा भतीजा बाहर दरवाजे पर खड़ा था। उसके स्कूल की आज छुट्टी थी। कालेज जाने लगा, तो सुखदेव उसका हाथ पकड़कर ,खींचता हुआ ले गया जल्दी-जल्दी बड़ी दूर तक। चार मिनट बाद लड़के ने दही का कुल्हड़ माँ के आगे ला धरा।

श्यामा उसी जली तरकारी से रोटी खाये जा रही थी ! दही देखकर अचरज से पूछा कहाँ से ले आया, रे?

लड़का बाहर को भागता-भागता बोला–"चाचाजी ने दिया है।"

पड़ोस में रहने वाली पंजाबिन बच्चों के कपड़े बहुत सस्ते सीती थी। उसके आदमी को श्यामा ने पति से आग्रह कर करके, उन्ही के आफिस में लगवा दिया था। सुखदेव अपने सब कपड़े जे. बी. दत्ता कम्पनी में सिलवाता था। बच्चों की कमीजें भी पिछली बार उसने वही सिलवाई। वे सब कमीजें पहनने पर बच्चों को छोटी हुई, और सिलाई लगी इतनी। देवर-भाभी में एक द्वन्द्व युद्ध हो गया। फलतः इस बार बच्चों की कमीजें पंजाबिन को दीं श्याम ने। सिलाई ऐसी सुघड़ हुई, कि देखकर दिल खुश हो गया। खुश होकर, उसके आगे एक रुपया धरा और हँसकर बोली–"अबकी बार मुन्ना के बाबू की कमीजें भी तुम्हीं से सिलवाऊँगी, बहिन !

"जरूर जरूर बहिनजी ! मुझी से सिलवाना बाबूजी की कमीजें। यह रुपया रख लो, बहिनजी, यह रुपया रख लो।"

श्याम ने कहा–"नही बहिन, सिलाई तो तुम्हें लेनी ही होगी।"

पंजाबिन बोली–"मुझ पर जुल्म न करो, बहिनजी!" आँखों से आँसू भरकर बोली–"जुल्म न करो मुझ पर। मुझे इतना जुदा न करो, रानी जी! मुन्ना क्या मेरा बेटा नहीं है? तुम्हें मेरे सिर की कसम, बहिनजी, यह रुपया उठा लो।....

वही एक रुपया था श्यामा के पास, और उसी रुपये को लिये-लिये सारे दिन घूमती रही कि आज साबुन मँगाकर छोड़ूंगी। पर ऐसी तकदीर फिरी, कि कोई न मिला साबुन लानेवाला। तब खीझकर, बड़े लड़के को समझा-बुझाकर, गली के मोड़वाली दूकान पर भेजा साबुन लाने और संतोष की साँस लेकर, बोली मन-ही-मन कि "सुबह अपनी नई टिक्की जब नहाऊँगी, तो देखूँगी ! रोज लगाऊँगी साबुन!"

पर लड़के की अक्ल पर पत्थर पड़ गये। दो आने का कपड़े धोने का बदबू-दार साबुन और चौदह आने पैसे माँ के सामने रखकर भाग गया।

सुखदेव ने चारों ओर नजर दौड़ाकर पूछा–"बच्चे कहाँ है?"

श्यामा हँसकर बोली–"चाचा की ससुराल गए है। प्रियंवदा का नौकर आया था। उनके यहाँ आज कथा है। तुम नहीं जाओगे?"

"सुखदेव ने जल्दी से कौर मुँह में देकर कहा पानी दो गिलास में!"

श्यामा जूठी थाली लेकर, बाहर निकली, और उसे यों खड़ा देखा, तो रुक गई।

सुखदेव ने हौले से कहा–"भाभी !"

भाभी हौले से बोली–"क्यों क्या है?"

"भाभी, आज बड़ी अच्छी फिल्म है।"

"तुम जा रहे हो?"

"पैसे नही हैं !"

भाभी ने सोचकर कहा–"चौदह आने से काम चल जाएगा?चौदह आने हैं मेरे पास।"

"लाओ, लाओ !"

श्यामा ने थाली वही रख दी, और दौड़ी जाकर बक्स में से चौदह

आने निकाल लाई और देवर की जेब में वे चौदह आने डालकर बोली हौले से–"वह उधर वाली कुंडी खटखटाना। मैं जागती रहूँगी !"

सुखदेव ने हौले से कहा–"अच्छा। भाई साहब पूछेंगे तो क्या कहोगी?"

श्यामा ने हौले से कहा–"कह दूँगी, कि प्रोफेसर के यहाँ गये है !"

सुखदेव ने हौले से कहा–"नमस्ते !"

तभी ब्रजलाल ने पीछे से आवाज दी–"खाना परोसो !"

श्यामा एक दिन धोबी को मैले कपड़े दे रही थी। जेबें खाली करके देवर का कोट डालने लगी धोबी के आगे, तो उसमें एक पत्र पाया, जिसमें लिखा था –"प्राणों के स्वामी हृदयेश्वर....।"

खूब खुश हुई वह, और सुखदेव को खूब डंराया धमकाया तुच्छ-सा हो गया वह भाभी के आगे। सिर झुका लिया, और बार-बार उस चिट्ठी को लौटने की जिद करने लगा। श्यामा ने हँसी रोककर कहा–"नही यह चिट्ठी तुम्हें नहीं, तुम्हारे भैया को दूँगी। जरा आटे-दाल का भाव मालूम हो तुम्हें !

सुखदेव से और कुछ बन न पड़ा। भाभी के पैरों पर सिर रखकर रोने लगा। ऐसा कायर निकला प्रेमी !

उसी दिन से भाभी 'नर्म सचिव' हो गई। उन्हीं की सलाह से सब काम होने लगा। एक दिन नुमाइश में दूर से प्रियंवदा के दर्शन भी करा दिये भाभी को। घर लौटने लगे, तो राह में भाभी चलती-चलती बोली–"हे भगवान यही तुम्हारी प्रियंवदा है ! रुप की जोत लिये सारी नुमाइश को चकाचौंध किये थी।"

सुखदेव सुनकर हौले से बोला–"गला काट लूँगां !"

भाभी बोली–"किसका गला काट लोगे? मेरा?"

पर सुखदेव और कुछ न बोला।.....

ब्रजलाल खाने बैठे हँसते गये, और खाते गये। और खाते-खाते ही बोले, हँसकर–"तुम्हारी देवरानी को देख आये।"

श्याम तब से गुम-सुम बैठी थी। वह सुनकर, कुछ न बोली। पति ने

हँसकर, कहा–"लड़की जरा उठते कद की है। सुखदेव के कन्धे तक समझो।"

श्यामा ने फिर भी कुछ न कहा। पति हँसकर बोले–"पैसा बहुत है उसके पास। सुखदेव को विलायत भेजने को तैयार है। एक मकान दहेज में देने को कह रहा है।"

श्यामा फिर चुप रही !

पर सुखदेव का पता न था। घंटे पर घंटा बीतता गया। सुखदेव जाने कहाँ जाकर बैठ गया था। खाना ठंडा होने लगा। श्यामा बार-बार दरवाजे तक आकर, दूर तक नजर दौड़ाने लगी दोनों लड़के एक-दूसरे का हाथ पकड़कर चाय वाले की दूकान पर जाकर, चाचाजी को खोज आये, और उदास होकर भूखे-प्यासे लेट रहे चाचाजी के पलंग पर।

शाम को सुखदेव कालेज से लौटा, तो धर में कुहराम मचा था। बड़ा लड़का मुन्ना बाहर आँगन में खड़ा रो रहा था। और भाभी वाले कमरे से छोटे-की चीख-पुकार सुनाई दे रही थी–"हाय, चाचाजी! हाय चाचाजी !"

"सुखदेव ने धबराकर मुन्ना से पूछा–"क्या हुआ, रे?"

मुन्ना रोता-रोता बोला–"अम्माँ ने उसे बहुत मारा है। अब रस्सी से बाँध रही है।"

सुखदेव ने जल्दी से किताबें आलमारी में फेंकी, और जूता बिना उतारे फड़ाक से किवाड़ खोलकर, भीतर जा खड़ा हुआ, जहाँ भाभी छोटे भतीजे के दोनों कोमल हाथ रस्सी से बाँध रही थी और मुख से कहती जा रही थीं "बुला चाचाजी को! देखूँ कौन तुझे बचाता है? और चिल्ला, और पुकार चाचाजी को !....

सुखदेव ने धक्का देकर, श्यामा को पीछे ढकेल दिया, और जल्दी-जल्दी बच्चे के हाथ खोलकर, उसे कलेजे से लगा लिया। बच्चा चाचाजी से लिपटकर फूट-फूटकर रोने लगा। आँखों में आँसू भरे, सुखदेव ने भाभी की ओर निहारकर पूछा–"क्यों मारा तुमने इसे?"

भाभी न बोली। हाथ पर हाथ धरे, बैठी रहीं।

"क्यों मारा तुमने इसे?"

भाभी ने हाथ उठाकर कहा–"जरा अपने कमरे में तो जाकर देखो! तुम्हारी भरी दवात उलट दी नासपीट ने। एक रुपये का नुकसान कर दिया।"

सुखदेव ने कहा इसलिए तुमने मारा, क्यों?

भाभी चुप रही।

सुखदेव ने कहा–"आज माफ करता हूँ आइन्दा जो तुमने बच्चे पर हाथ चलाया, तो मैं खाना छोड़ दूगाँ समझी?"

भाभी न बोलीं।

सुखदेव ने बाहर जाते-जाते कहा–"जरा-सी दावात के पीछे अधमरा कर दिया मेरे लड़के को।"

उस शाम को ब्रजलाल देर से घर लौटे। वह बातूनी फिर मिल गया क्या रास्ते में?

खूब भूखा गये थे। आते ही बोले–"खाना लाओ। यहीं कमरे में ले आओ।"

श्यामा ने दृढ़ स्वर में कहा–"खाना नहीं है।"

पति ने अचरज से पूछा–"क्यों, अभी तक नहीं बना क्या?"

"बना है", श्यामा ने दृढ़ श्वर में कहा–"लेकिन तुम्हारे लिये नहीं!"

ब्रजलाल ने खीझकर कहा–"क्या बक रही हो? जाओ, थाली परोसकर लाओ।"

श्यामा पासवाली कुरसी पर धम्म से बैठ गई और हाथ उठाकर बोली–"पहले एक बात का फैसला कर दो, तब खाना लाऊँगी।"

"बोलो, क्या है?"

श्यामा ने आगे को झुककर कहा–"इस घर की मालकिन कौन है?"

ब्रजलाल ने हँसकर कहा–"तुम !"

श्यामा ने कहा–"उस बातूनी आदमी से तुमने यह बात कही या नहीं?"

"तब वह मेरे देवर से अपनी लड़की व्याहनेवाला कौन होता है? और तुम्हीं क्या हक रखते हो इस तरह मुझसे बिना पूछे कोई बात कहने का?"

"मैं उसका बड़ा भाई हूँ।" पति ने हँसकर कहा।

"और मैं कौन हूँ?"—श्यामा ने आँखें सिकोड़कर पूछा।

"तुम भाभी हो उसकी।"

"सिर्फ भाभी?"

ब्रजलाल चुप रह गये।

श्यामा ने सिर तानकर कहा—"जनाब, मैं ही उसकी माँ हूँ। मैं उसकी बहिन हूँ। मैं ही सब-कुछ हूँ उसकी। समझे? मेरी आज्ञा के खिलाफ वह एक कदम नहीं रख सकता। विश्वास न हो, तो करके देख लो कुछ। तुम यह शादी ठहराओ, मैं कल ही उसे लेकर यहाँ से चली जाऊँगी। बहुतेरा कमा लेगा। तुम समझते क्या हो मुझे?"

ब्रजलाल ने कहा—"तुम क्या कहलवाना चाहती हो मुझसे? जल्दी से बतला दो। मैं कहने को तैयार हूँ। खाना ला दो फिर।"

खाना प्रायः समाप्त हो चुका था। ब्रजलाल ने पानी पीकर एक डकार ली, फिर पत्नी के शान्त, सौम्य मुख की ओर क्षण भर निहार कर बोले—"तो यहाँ अपने देवर की शादी न करोगी।"

"हरगिज नहीं !—श्यामा सिर हिलाकर बोली।

पति ने हँसकर कहा—"वह मुझे सौ रुपये भेंट कर गया है।"

"लौटा दो।" श्यामा ने फौरन कहा।

पति बोले—"लौटा दूंगा।

श्यामा को प्रियवदा के घर जाना था। उसने जल्दी-जल्दी रसोई बनाई, फिर सब सँभाल-सुधाकर वहाँ जाने की तैयारी करने लगी।

सुखदेव पाइप खोलकर खड़ा था और सोचता पानी की धार को देख रहा था। खट से भाभी ने पैरों के पास वह साबुनदानी रख दी और लौट चली लम्बे डग भरती।

सुखदेव क्षणभर साबुनदानी को निहारता रहा। फिर उसने नीचे झुककर साबुन की टिक्की उठा ली और फिर तड़ित-वेग से दूर जाती भाभी की ओर वह साबुन फेंक दिया जोर से।

पर साबुन भाभी के न लगा। जाने कैसे उसी क्षण ऊपर वाले मारवाड़ी

सेठ सामने आ पहुँचे और जाने कैसे वह साबुन सेठजी की तोंद पर फटाक से लगा।

"अरे, मार डाला रे !" सेठजी वही पेट पकड़कर बैठ गए।

श्यामा ने पीछे घूमकर देखा और सुखदेव ने भी देखा। घबराकर वह सेठ जी के पास दौड़ा आया और दोनों हाथों से उसकी वजनी देह उठाता बोला–"अभी इधर एक बन्दर कूदा था। मैंने देखा था, उसके हाथ में यह साबुन था।' सेठजी ने एक हाथ की टेक जमीन पर लगाई और दूसरे हाथ में वह सामने पड़ा साबुन लेकर उठ बैठे किसी तरह। फिर उस साबुन को लौट-पौट कर निहारा और सुखदेव की ओर तिरही नजर से ताक कर बोला–"साबण तो नयो है ! छै आणे का माल दे गया हनुमान !"

सेठजी साबुन लेकर चल दिये। सुखदेव और श्यामा देखते रह गये। ...आखिर प्रियंवदा का नौकर आ गया बुलाने। श्यामा ने दोनों लड़कों को सजासजूकर बाहर खड़ा किया। फिर डरती-डरती देवर के पास आकर बोली–"जरा अपना रुमाल दे दोगे?"

"क्यों, तुम्हारा रुमाल क्या हुआ?"

"मेरे पास कब था रुमाल?"

"तो यों ही जाओ !"

श्यामा ने अनुनय करके कहा–"दे दो जरा देर के लिए !" सुखदेव ने चिल्लाकर कहा– "नहीं दूँगा रुमाल ! चली जाओ सामने से !"

श्यामा ने मुँह पर हाथ रखकर कहा–"अरे, धीरे बोलो ! बाहर नौकर खड़ा है !" और चल दी।

प्रियंवदा ने उसी विनम्र टोन में कहा–"मैं सच कह रही हूँ दीदी, न जाने कितनी बार उनके मुँह से यह बात सुन चुकी हूँ कि मेरी भाभी के सामने लक्ष्मण की सीता भी तुच्छ है। कितनी ही बार तुम्हारी बड़ाई करते-करते तुम्हारी बातें सुनाते-सुनाते आँख में आँसू भर लाये हैं, और भरे गले से कहा है कि "भाभी मेरी इस धरती माता की तरह है ! ऐसी ही सहनशील, ऐसी ही विशाल, ऐसी ही महान! मुझे कहते थे कि उनकी

सेविका बनकर जीवन सफल ककर लेना अपना ! तुम्हारा जन्म-जन्मान्तर के पाप धुल जायेंगे !''कहते-कहते प्रियंवदा का स्वर करुण हो उठा और नयन गीले हो गये।

श्यामा न बोली। बोल नहीं पा रही थी। उसके कण्ठ में जाने क्या आकर अटक गया था।

प्रियंवदा की आँखें सजल हो गई थीं। उन्ही सजल आँख से दीदी का सौम्य निहारकर बोली–''दीदी, तुम देवता के कण्ठ की वरमाला हो। राह की धूल तो मैं हूँ, जो चरणों से लगकर पवित्र हो गई ! कहकर उसने श्यामा के पैरों से अँगुलियाँ माथे से छुआ लीं।....

तभी छोटा लड़का घर की पालतू बिल्ली को गोद में लिये आ खड़ा हुआ। प्रियंवदा ने दोनों हाथ बढ़ाकर उसे गोदी में खींच लिया, बोली–''तुम्हारा क्या नाम है भैया?''

लड़के ने ऊपर मुँह करके कहा–''पहले तुम अपना नाम बतलाओ ! ''प्रियंवदा हँसने लगी।

श्यामा ने हौले से कहा–''ये तुम्हारी चाचीजी हैं। समझे?'' फिर प्रियंवदा की स्वच्छ साड़ी की ओर देखकर बोला–''बेशऊर, चमार कहीं का! सारी साड़ी गन्दी कर दी पैरों से। उतार दो बहिन इसे।''

लड़का प्रियंवदा के गले से लिपटकर बोला–''नहीं उतरुँगा। ऐं चाचीजी?''

प्रियंवदा ने पुलकित होकर बच्चे को फिर चूम लिया और हौले-हौले कहने लगी–''मेरा राजा भैया विलायत जाएगा पढ़ने। बैरिस्टर बनेगा न?''

लड़के ने कहा–''मैं तो प्रेसीडेण्ट बनूँगा !''

श्यामा हँसने लगी। हँसते-हँसते बोली–''यही सब रटा दिया है चाचीजी ने!''

तभी सहसा प्रियंवदा की माँ ने आकर कहा–''बेटी चलो खाना खाओ।''

....रामाशंकर प्रियंवदा का बड़ा भाई था। उसकी चौक में बहुत-सी दुकानें थी। पत्नी उसकी मर गई थी। घर का कर्त्ता-धर्त्ता वही था।

रामाशंकर व्यस्त होकर, श्यामा के लिये स्वयं थाली लगा रहा था कि

वह आ पहुँची। अम्मा जी भीतर जाने क्या लेने गई कि चट-से श्यामा कढ़ाई के पास आ बैठी और एक पूरी बेलकर गर्म घी में छोड़ दी और प्रसन्न मुद्रा से बोली–"आज भैया को मैं बनाकर खिलाऊँगी !....

उसी सजी थाली में रामाशंकर भैया को खिलाकर श्यामा चूल्हे के पास से उठ आई। फिर पास खड़ी प्रियंवदा का हाथ पकड़कर खींचती हुई बोली–"आओ सखी ! मुझे तो बड़ी भूख लगी।" और वही भैया की झूठी थाली आगे को खींच ली और पुकारकर कहा–"अम्मा, हम लोगों को खाना परोस जाओ !"

अम्मा ने धड़कता कलेजा लिये पूछा–"तो फिर, बेटी, मैं कल रामा का भेजूँ बड़े दामाद के पास ?"

श्यामा ने भौंहें सिकोड़कर कहा–"बड़े दामाद कौन खेत की मूली है अम्मा, तुम बड़ी बेटी की इज्जत गिराओगी क्या? तुम्हारी बड़ी बेटी का।

बड़ी बेटी ने तब तनिक-सी नाराज़ होकर कहा–"तुम्हें यकीन नहीं

हुआ क्या अम्मा? अरे, मैं कहती हूँ, सुखदेव के साथ प्रियंवदा की शादी होगी, होगी, होगी। बस !"

रामाशंकर भी पास आ खड़ा हुआ था। श्यामा ने उसकी ओर देखकर पूछा–"भैया अपनी दुकान पर एक साबुन भी बिकता है न?

बहुतेरा साबुन है तुम्हारी दुकान में। साबुन की तो एजेंसी तक है।

तब एक शर्त है," श्यामा ने ऊँगली उठाकर कहा।

अम्मा का दिल धड़कने लगा। रामाशंकर भी घबराया कि भगवान, क्या है इसकी?

श्यामा अँगुली उठाकर बोली "भैया तुम्हे हर महीना मुझे एक साबुन की टिकी देनी होगी। बोलो हामी भरते हो?"

रामाशंकर ठहाका मारकर हँस पड़ा।

अम्मा ने आँखों में आँसू भरकर हाय पगली!

पर श्यामा न हँसी। बल्कि स्वर में दुःख भरकर बोली" तुम्हें क्या मालूम

अम्मा, कि मैं साबुन के लिए कितनी परेशान रहती हूँ।''

रामाशंकर ने गद्‌गद् कंठ से कहा–'' बहिन आज ही तुम्हारे पास एक पेटी साबुन भिजवा दूँगा।''

नौकर पीछे से बोला–''मैं दे आऊँगा शाम को !''

जाने किधर से बड़े लड़के ने सब सुन लिया। वह रामाशंकर के आगे आकर बोला–''मामाजी, आज जीजी से और चाचाजी से साबुन के पीछे खूब लड़ाई हुई थी।''

श्यामा ने चिल्लाकर कहा– सच, मामाजी, इसने चाचाजी का साबुन ले लिया था। सो चाचाजी ने....''

श्यामा ने लपक कर उसका मुँह बन्द कर दिया।

सारा घर हँस रहा था।

आपके जवाब के इन्तजार में–
शिवसिंह नयाल
'अलारिप्पु', ई ६/६२, पहली मंज़िल, सफदरजंग इन्कलेव,
नई दिल्ली-११०२९. दूरभाष : ६०६३२७

ज्योति लेजर टाइपसेटिंग
३/१ ईस्ट गुरुअंगद नगर, दिल्ली-९१